Dream Dare Win www.jeywin.com

CS (MAIN) EXAM, 2010

No. 0807

D-DTN-K-IOB

HINDI

Paper II

(Literature)

Time Allowed : Three Hours | *Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

Candidates should attempt questions no. 1 and 5 which are compulsory, and any THREE of the remaining questions, selecting at least ONE question from each Section.

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in HINDI.

SECTION A

1. किन्हीं ***तीन*** पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके काव्य-सौन्दर्य को उद्घाटित कीजिए : *20×3=60*

(क) हरि काहे के अंतर्यामी ?
जौ हरि मिलत नहीं यहि औसर, अवधि बतावत लामी ।।
अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी ?
सो कह पीर पराई जानै जो हरि गरुड़ागामी ।
आई उघरि प्रीति कलई सी जैसे खाटी आमी ।।
सूर इते पर अनख मरति हैं, ऊधो, पीवत मामी ।।

www.jeywin.com Dream Dare Win

Dream Dare Win www.jeywin.com

(ख) लंबा मारग दूरि घर, विकट पंथ बहु भार ।।
कहौ संतो क्यूँ पाइये, दुर्लभ हरि-दीदार ।।
सब रग तंत रबाब तन, बिरह बजावै नित्त ।
और न कोई सुणि सकै, कै साईं कै चित्त ।।

(ग) नित्य-यौवन छवि से हो दीप्त विश्व की करुण कामना मूर्त्ति,
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्त्ति ।
उषा की पहिली लेखा कांत, माधुरी से भीगी भर मोद,
मद भरी जैसे उठे सलज्ज भोर की तारक-द्युति की गोद ।

(घ) "ओ विशाल तरु !
शत-सहस्त्र पल्लवन-पतझरों ने जिसका नित रूप सँवारा,
कितनी बरसातों कितने खद्योतों ने आरती उतारी,
दिन भौंरे कर गये गुंजरित,
रातों में झिल्ली ने
अनथक मंगल-गान सुनाये,
साँझ-सवेरे अनगिन
अनचीन्हे खग-कुल की मोद-भरी क्रीड़ा-काकलि
डाली-डाली को कँपा गयी —"

2. (क) तुलसीदास के प्रबंध-कौशल के वैशिष्ट्य का मूल्यांकन कीजिए ।

(ख) बिहारी के काव्य में चित्रित प्रेम और सौन्दर्य सांसारिकता से निबद्ध हैं — विवेचन कीजिए । *30×2=60*

www.jeywin.com Dream Dare Win

Dream Dare Win www.jeywin.com

3. (क) 'भारत भारती' में अभिव्यक्त कवि की पुनरुत्थानवादी दृष्टि एवं राष्ट्रीय चेतना के द्वन्द्व की समीक्षा कीजिए ।

(ख) युद्ध और शांति की समस्या वास्तव में सामाजिक समता की समस्या है — 'कुरुक्षेत्र' के आधार पर विचार कीजिए । 30×2=60

4. (क) निराला जीवन के राग-विराग के विशिष्ट कवि हैं — विवेचन कीजिए ।

(ख) नई कविता के आत्मसंघर्ष का सर्वोत्तम रूप मुक्तिबोध की कविताओं में मिलता है — इस विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए । 30×2=60

www.jeywin.com Dream Dare Win

SECTION B

5. किन्हीं ***तीन*** गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करते हुए उनके अभिव्यक्तिपरक सौन्दर्य को उद्घाटित कीजिए : *20×3=60*

(क) वेदान्त ने बड़ा ही उपकार किया । सब हिन्दू ब्रह्म हो गए । किसी को इतिकर्त्तव्यता बाक़ी ही न रही । ज्ञानी बनकर ईश्वर से विमुख हुए, रूक्ष हुए, अभिमानी हुए और इसी से स्नेहशून्य हो गए । जब स्नेह ही नहीं तब देशोद्धार का प्रयत्न कहाँ !

(ख) "जिसे संसार दुःख कहता है, वही कवि के लिए सुख है । धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ संसार को चाहे कितना ही मोहित कर लें, कवि के लिए यहाँ ज़रा भी आकर्षण नहीं है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं । जिस दिन इन विभूतियों में उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा ।"

(ग) तुमने लिखा था कि एक दोष गुणों के समूह में उसी प्रकार छिप जाता है जैसे इन्दु की किरणों में कलंक; परन्तु दारिद्र्य नहीं छिपता; सौ-सौ गुणों में भी नहीं छिपता । नहीं, छिपता ही नहीं, सौ-सौ गुणों को छा लेता है — एक-एक करके नष्ट कर देता है ।

Dream Dare Win www.jeywin.com

(घ) दोपहर की उस घड़ी में मीडोज़ अलसाया-सा ऊँघता जान पड़ता था । जब हवा का कोई भूला-भटका झोंका आ जाता था, तब चीड़ के पत्ते खड़खड़ा उठते थे । कभी कोई पक्षी अपनी सुस्ती मिटाने झाड़ियों से उड़कर नाले के किनारे बैठ जाता था, पानी में सिर डुबोता था, फिर उड़कर हवा में दो-चार निरुद्देश्य चक्कर काटकर दुबारा झाड़ियों में दुबक जाता था ।

किन्तु जंगल की ख़ामोशी शायद कभी चुप नहीं रहती । गहरी नींद में डूबी सपनों-सी कुछ आवाज़ें नीरवता के हल्के झीने परदे पर सलवटें बिछा जाती हैं, मूक लहरों-सी तिरती हैं, मानो कोई दबे पाँव झाँककर अदृश्य संकेत कर जाता है, 'देखो, मैं यहाँ हूँ ।'

6. (क) प्रेक्षकों पर सम्प्रेषणगत प्रभाव की दृष्टि से जयशंकर प्रसाद और मोहन राकेश के नाटकों का तुलनात्मक विवेचन कीजिए ।

(ख) 'स्कन्दगुप्त' में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना पर तत्कालीन स्वाधीनता-आन्दोलन के प्रभावों का आकलन कीजिए ।

$30 \times 2 = 60$

7. (क) शुक्लजी के मनोविकार सम्बन्धी निबन्धों पर उनकी रसदृष्टि का प्रभाव है — इस विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए ।

(ख) 'कविता क्या है' — निबंध के आधार पर सभ्यता के विकास और कविकर्म का द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध निरूपित कीजिए ।

$30 \times 2 = 60$

www.jeywin.com Dream Dare Win

8. (क) 'दिव्या' ऐतिहासिक नहीं, ऐतिहासिक परिवेश की कथा है — विवेचन कीजिए ।

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी सम्बन्धों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिए । *30×2=60*

www.jeywin.com Dream Dare Win